आलस्य और अलबेलापन - 29

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ सीज़न का फल अर्थात् सहज फल की प्राप्ति करते हो? फल अनुभव होता है वा फल निकलने के पहले माया रूपी पंछी फल को खत्म तो नहीं कर देते हैं। **तो इतना अटेन्शन रहता है वा मेहनत करते, योग लगाते, पढ़ाई भी पढ़ते, यथाशक्ति सेवा भी करते, फिर भी जैसा प्राप्त होना चाहिए वैसा नहीं होता।** होना सदा चाहिए क्योंकि एक का पद्मगुणा है तो अनगिनत फल की प्राप्ति हुई ना। फिर भी सदा नहीं रहता। जितना चाहिए उतना नहीं रहता। उसका कारण? **संकल्प, कर्म रूपी बीज शक्तिशाली नहीं। वातावरण रूपी धरनी शक्तिशाली नहीं।** वा धरनी और बीज ठीक है, फल भी निकलता है लेकिन 'मैंने किया', इस हद के संकल्प द्वारा कच्चा फल खा लेते वा माया के भिन्न-भिन्न समस्याएँ, वातावरण, संगदोष, परमत वा मनमत, व्यर्थ संकल्प रूपी पंछी फल को समाप्त कर देते हैं?

➳ _ ➳ **इसलिए फल अर्थात् प्राप्तियों से अनुभूतियों के खज़ाने से वंचित रह जाते।** ऐसी वंचित आत्माओं के बोल यही होते कि - "पता नहीं क्यों ! ऐसे व्यर्थ मेहनत करने वाले तो नहीं हो ना। सहज योगी हो ना? सहज प्राप्ति की सीज़न पर मेहनत क्यों करते हो! वसा है, वरदान है, सीज़न है, बड़ी दिल वाला दाता है। फ़राखदिल भाग्य विधाता है फिर भी मेहनत क्यों? **सदा दिलतख्तनशीन बच्चों को मेहनत हो नहीं सकती। संकल्प किया और सफ़लता मिली। विधि का स्विच आन किया और सिद्धि प्राप्त हुई। ऐसे सिद्धिस्वरूप हो ना वा मेहनत कर-कर के थक जाते हो। मेहनत करने का कारण है - अलबेलापन और आलस्या स्मृतिस्वरूप के किले के अन्दर नहीं रहते हो।** वा किले में रहते हुए कोई न कोई शक्ति की कमज़ोरी के दरवाजे वा खिड़की खोल देते हो। इसलिए माया को चांस दे देते हो।

➳ _ ➳ चेक करो कि कौन-सी शक्ति की कमी है अर्थात् कौनसा रास्ता खुला हुआ है। संकल्प में भी दृढ़ता नहीं है तो समझो थोड़ा सा रास्ता खुला हुआ है। **इसलिए कहते - चल तो ठीक रहे हैं, नियम तो सब पालन कर रहे हैं, श्रीमत पर चल रहे हैं लेकिन नम्बरवन खुशी और दृढ़ता से नहीं।** नियम पर चलना ही पड़ेगा, ब्राह्मण परिवार की लोकलाज के वश, क्या कहेंगे, क्या समझेंगे, इस मज़बूरी वा भय से नियम तो नहीं पालन करते? **दृढ़ता की निशानी है 'सफ़लता'। जहाँ दृढ़ता हैं वहाँ सफ़लता न हो, यह हो नहीं सकता। जो संकल्प में भी नहीं होगा वह प्राप्ति होगी अर्थात् संकल्प से प्राप्ति ज्यादा होगी।** तो वर्तमान समय सहज सर्व प्राप्ति का युग है। **(29.12.1983)**

➳ _ ➳ अभी आप निमन्त्रण देते हो, बुलाते हो। फिर आपसे सेकण्ड के मिलने के लिए बहुत मेहनत करेंगे कि हमें मिलने दो। ऐसा साक्षात साक्षात्कार स्वरुप आप सभी का होगा। ऐसे समय पर अपनी श्रेष्ठ जीवन और श्रेष्ठ प्राप्ति का महत्व आप बच्चों में से भी उस समय ज्यादा पहचानेंगे। **अभी अलबेलापन और साधारणतापन के कारण अपनी श्रेष्ठता और विशेषता को भूल भी जाते हो। लेकिन जब अप्राप्ति वाली आत्मायें**

प्राप्ति के प्यास से आपके सामने आयेंगे तब ज्यादा अनुभव करेंगे कि हम कौन और यह कौन! अभी बापदादा द्वारा सहज और बहुत खजाना मिलने के कारण कभी-कभी स्वयं की और खजाने की वैल्यू को साधारण समझ लेते हो – लेकिन **एक-एक महावाक्य, एक-एक सेकण्ड, एक-एक ब्राह्मण जीवन का श्वास कितना श्रेष्ठ है। वह आगे चल ज्यादा अनुभव करेंगे।**

➳ _ ➳ ब्राह्मण जीवन का हर सेकण्ड एक जन्म नहीं लेकिन जन्म-जन्म की प्राप्लब्ध बनाने वाला है। **सेकण्ड गया अर्थात अनेक जन्मों की प्रालब्ध गई। ऐसी अमूल्य जीवन वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो।** ऐसी श्रेष्ठ तकदीरवान विशेष आत्मायें हो। समझा कौन हो? ऐसे श्रेष्ठ बच्चों से बाप मिलने आये हैं। भल विदेशी बच्चों का यह सदा याद रहता है ना! वा कभी भूलता कभी याद रहता है? **याद स्वरुप बने हो ना! जो स्वरुप बन जाते वह कभी भूल नहीं सकते। याद करने वाले नहीं याद स्वरुप बनना है।**

(18.02.1984)

➢➢ संग दोष कहा से आता है ?

➳_ ➳ जिनके साथ हम रहते है

→ उनके साथ रहते परदर्शन, परचिंतन करने से

➳_ ➳ T.V से

→ देखना समाचार था, पर वो देखते देखते सीरियल, फिल्म देखने लग जाते है से

- उसमे टाइम वेस्ट करने से
- उसका प्रभाव पड़ता है

➢➢ परमत

➳_ ➳ मुरली में जो बाबा श्रीमत देते है, उसे फॉलो नई करते और अपनी मत चलते है

→ की इस मुरली में बाबा ने ऐसा कहा था, वैसा कहा था..

- हमे यह ध्यान रखना है की **जिस समय मुरली चलती है उस दिन बाबा ने किस संदर्भ में अपने महावाक्य उच्चारें है वो देखना है..उसमे अपनी मत नही चलानी है**

▶ **अपनी सुविधा अनुसार श्रीमत में मनमत और परमत को मिक्स नही करना है**

➳_ ➳ इन सभी कारणों की वजह से फिर व्यर्थ भी चलता है

→ **और हम ही समस्याओ का आह्वान करते है संगदोष में आकर**

➢➢ फल

➳_ ➳ फल अर्थात् प्राप्तियों से,अनुभूतियों के खज़ाने से वंचित रह जाते

→ अगर व्यर्थ संकल्प चलता रहता है तो

■ हमको जो फल मिलने वाला होता है, वो वहा ही खत्म हो जाता है

▶ **और भविष्य के लिये जमा भी नही होता है**

➳_ ➳ सदा दिलतख्तनशीन बच्चों को मेहनत हो नहीं सकती

→ **संकल्प किया और सफ़लता मिली**

■ **विधि का स्विच ऑन किया और सिध्धि प्राप्त हुई**

➢➢ NO.1 ख़ुशी किसे मिल सकती है ?

➳_ ➳ जिसे NO.1 अपनी ख़ुशी के मुताबिक सेवा मिलती है उन्हें बहुत ख़ुशी मिलती है

→ अगर कोई सेवा थोपता है, कोई सेवा तो उन्हें ख़ुशी नही मिलती है

■ मनचाही जो चीज करते है

▶ उससे बहुत ख़ुशी मिलती है

➢➢ द्रढ़ता

➳_ ➳ **दृढ़ता की निशानी है 'सफ़लता'**

→ **जहाँ दृढ़ता हैं, वहाँ सफ़लता न हो, यह हो नहीं सकता**

■ **संकल्पों में द्रढ़ता होगी तो रास्ता आपेही खुल जायेगा**

■ जो संकल्प में भी नहीं होगा, वह प्राप्ति होगी अर्थात् संकल्प से प्राप्ति ज्यादा होगी

■ **कोई भी संकल्प ख़ुशी और द्रढ़ता से करना है**

▶ **ख़ुशी होती है तो द्रढ़ता आपेही आ आती है**